विश्व धर्मों में ज्योतिष और ब्रह्मांड विज्ञान : एक साझा दृष्टि

ज्योतिष और ब्रह्मांड विज्ञान मानव सभ्यता की उन अदृश्य डोरियों में से हैं जिन्होंने न केवल धर्म और संस्कृति की जड़ों को सींचा बल्कि समय, भाग्य और जीवन की व्याख्या करने की भाषा भी दी. जब हम प्राचीन समाजों की ओर देखते हैं तो पाते हैं कि आकाश का रहस्य ही उनके जीवन का आधार था. तारों की गति, ग्रहों का संचार, सूर्य और चंद्रमा के उदय और अस्त, ग्रहण और विषुव जैसे प्राकृतिक घटनाक्रम किसी एक भूगोल या धर्म के लिए सीमित नहीं थे. वे सार्वभौमिक थे, और इसी सार्वभौमिकता ने उन्हें धर्म की संरचना में स्थायी रूप से स्थापित कर दिया.

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

विश्व के प्रत्येक धर्म ने अपनी-अपनी पद्धति और दार्शनिक दृष्टि के अनुसार ज्योतिष और ब्रह्मांड विज्ञान को आत्मसात किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आकाश की ओर देखना मनुष्य की साझा सांस्कृतिक प्रवृत्ति रही है. इस संदर्भ में जब हम विश्व धर्मों के भीतर ज्योतिष और ब्रह्मांड विज्ञान की उपस्थिति और उसकी भूमिका का अध्ययन करते हैं, तो यह केवल धार्मिक मान्यताओं की व्याख्या नहीं बल्कि मानवता की सामूहिक चेतना की पड़ताल भी है.

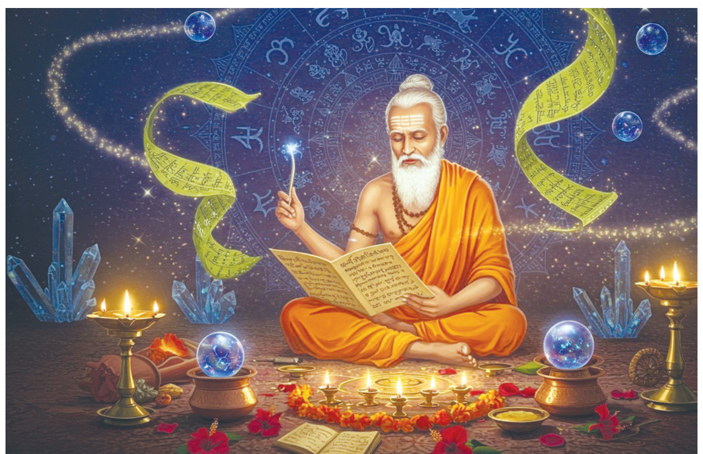

भारतीय संदर्भ में यह तथ्य सर्वविदित है कि वेदों के युग से ही आकाश निरीक्षण धर्म और जीवन का अंग रहा है. ऋग्वेद में सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की प्रशंसा के साथ ही यज्ञीय विधानों में उनके प्रभाव का वर्णन मिलता है. वैदिक ऋषियों के लिए आकाश केवल दृश्य वस्तु नहीं था, बल्कि देवत्व की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति थी. ग्रह और नक्षत्र केवल खगोलीय पिंड नहीं थे, बल्कि वे देवताओं के रूप में प्रतिष्ठित थे. यह दृष्टिकोण बाद के काल में ज्योतिष शास्त्र के रूप में विकसित हुआ, जिसने न केवल धार्मिक अनुष्ठानों के शुभ मुहूर्त तय किए बल्कि मानव जीवन की गति और नियति की गणना का भी साधन प्रदान किया. यहां समय को 'कालपुरुष' के रूप में देखा गया और ब्रह्मांड की हर धड़कन को धर्मशास्त्रीय अर्थ में ग्रहण किया गया. यही कारण है कि हिंदू धर्म में ब्रह्मांड विज्ञान केवल विज्ञान नहीं बल्कि धर्म और दर्शन का आधार है.

इस्लाम के भीतर ज्योतिष और ब्रह्मांड विज्ञान का स्थान कहीं अधिक जटिल और बहुआयामी रहा. कुरआन में सितारों और आकाश की रचना को ईश्वर की शक्ति का प्रमाण माना गया है. इस्लामी सभ्यता ने गहन खगोल विज्ञान का विकास किया, और बगदाद, दमिश्क और काहिरा जैसे नगर वैज्ञानिक अनुसंधान के केंद्र बने. लेकिन इसके साथ ही इस्लामिक उलेमा ने भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिष को संदेह की दृष्टि से भी देखा, क्योंकि वह तकदीर और ईश्वर की सर्वज्ञता से टकराता प्रतीत होता था. फिर भी, व्यावहारिक स्तर पर, ग्रहों की गति की गणना ने नमाज़ के समय निर्धारण, रमज़ान और ईद की तिथियों, और क़िबला की दिशा तय करने में केंद्रीय भूमिका निभाई. यानी, भले ही धार्मिक ग्रंथों में ज्योतिष पर संदेह किया गया हो, परंतु इस्लामी सभ्यता के दैनिक जीवन में ब्रह्मांड विज्ञान अनिवार्य अंग बन गया. यह विरोधाभास ही इस्लामिक दृष्टिकोण को विशेष बनाता है कि जहाँ भविष्यवाणी पर रोक थी, वहीं खगोलीय गणना की वैज्ञानिकता को धार्मिक जीवन में आत्मसात कर लिया गया.

ईसाई धर्म में स्थिति और भी दिलचस्प है. बाइबिल में तारे ईश्वर की महिमा के प्रतीक हैं. लेकिन मध्ययुगीन यूरोप में चर्च ने अक्सर ज्योतिष को शंका की दृष्टि से देखा, क्योंकि यह ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता को चुनौती देता था. फिर भी, व्यवहारिक स्तर पर, ईसाई राजाओं और पोपों ने दरबारों में ज्योतिषियों को स्थान दिया. पुनर्जागरण के युग में ज्योतिष और खगोल विज्ञान दोनों ने एक साथ विकास किया. कोपरनिकस और गैलीलियो जैसे वैज्ञानिक भले ही खगोल विज्ञान की वैज्ञानिक नींव रखते हों, पर उनका उदय उस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में हुआ जहाँ ज्योतिष पहले से गहराई से मौजूद था. पश्चिमी ईसाई समाज में भी जन्म पत्रिकाएँ, ग्रहों की चाल और राशियों का अध्ययन लोकप्रिय बना रहा, भले ही चर्च का आधिकारिक रुख अक्सर नकारात्मक रहा. इस प्रकार, ईसाई समाज में ज्योतिष और ब्रह्मांड विज्ञान का रिश्ता एक सतत संघर्ष और संवाद का रहा, जिसमें विश्वास और विज्ञान दोनों अपनी-अपनी भूमिका निभाते रहे.

बौद्ध धर्म में ज्योतिष का स्वरूप अपेक्षाकृत व्यावहारिक रहा. बुद्ध स्वयं आकाशीय गणना से परे करुणा और निर्वाण की शिक्षा देते थे, परंतु उनके अनुयायियों ने समय निर्धारण और अनुष्ठानों के आयोजन के लिए ज्योतिष का उपयोग किया. तिब्बती बौद्ध परंपरा में तो ज्योतिष अत्यंत प्रभावशाली बन गया, जहाँ चीनी और भारतीय खगोल पद्धतियों का संगम दिखता है. वहाँ ग्रह-नक्षत्रों की गति और पंचांग के आधार पर न केवल धार्मिक पर्व बल्कि औषधि विज्ञान और सामाजिक जीवन की गतिविधियाँ भी संचालित होती हैं. जापान और दक्षिण-पूर्व एशिया में भी ज्योतिष ने बौद्ध धर्म के साथ-साथ अपनी जगह बनाई, जिससे स्पष्ट होता है कि ब्रह्मांड विज्ञान का सांस्कृतिक प्रसार धार्मिक विस्तार के साथ-साथ हुआ.

इस साल का आखिरी चंद्रग्रहण 7 सितंबर को

सनातन धर्म में विशेष महत्व रखने वाला इस वर्ष का दूसरा और आखिरी चंद्रग्रहण 7 सितंबर 2025 को लगेगा. यह ग्रहण भाद्रपद मास की पूर्णिमा तिथि को होगा और यह पितृपक्ष के पहले दिन आएगा. हिंदू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, चंद्रग्रहण का मानव जीवन और धार्मिक कार्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है.

ज्योतिषाचार्य के अनुसार, यह चंद्रग्रहण भारतीय समयानुसार रात 9 बजकर 57 मिनट पर शुरू होगा और रात 1 बजकर 27 मिनट पर समाप्त होगा. इसकी कुल अवधि लगभग 3 घंटे 30 मिनट होगी. यह ग्रहण केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे एशिया, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, न्यूजीलैंड, उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका में भी देखा जा सकेगा.

सूतक काल और धार्मिक मान्यताएं

ग्रहण के कारण भारत में सूतक काल लागू होगा. धार्मिक शास्त्रों के अनुसार, चंद्रग्रहण से 9 घंटे पहले सूतक शुरू हो जाता है. इस बार सूतक 7 सितंबर को दोपहर 12 बजकर 57 मिनट से प्रारंभ होगा. सूतक काल में मंदिरों के कपाट बंद रहते हैं, और देव विग्रहों का स्पर्श वर्जित होता है. इस दौरान भोजन ग्रहण नहीं करना चाहिए और घरों में साफ-सफाई तथा नियमों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है.

ग्रहण के दौरान क्या करें और क्या न करें

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, ग्रहण के समय जप, तप और पूजा का विशेष महत्व है. इस दौरान किए गए धार्मिक कर्म सामान्य समय की तुलना में 100 गुना अधिक फलदायी माने जाते हैं. गर्भवती महिलाओं को इस दौरान विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है. साथ ही, ग्रहण के दौरान सब्जी काटने या किसी भी सामग्री को काटने से परहेज करना चाहिए. धार्मिक विद्वानों का मानना है कि ग्रहण का समय मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी उपयुक्त होता है. पितृपक्ष के पहले दिन ग्रहण होने के कारण पितृ तर्पण, दान और धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व और भी बढ़ जाता है.

हरतालिका तीज, जानें पूजा विधि और शुभ मुहूर्त

इस साल हरतालिका तीज का पावन व्रत 26 अगस्त, मंगलवार को मनाया जाएगा. यह व्रत हर साल भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को पड़ता है. इस दिन विवाहित और कुंवारी कन्याएं भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना कर सुखी वैवाहिक जीवन और संतान प्राप्ति की कामना करती हैं. हरतालिका तीज गणेश चतुर्थी से ठीक एक दिन पहले मनाई जाती है.

हरतालिका तीज कथा और महत्व

हरतालिका शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है-हरत (अपहरण) और आलिका (सहेली). पौराणिक कथाओं के अनुसार, माता पार्वती की सहेलियों ने उनके पिता की इच्छा के विरुद्ध उनका विवाह भगवान विष्णु से होने से रोकने के लिए उनका अपहरण कर उन्हें घने जंगल में छिपा दिया था. इसी कारण

इस व्रत का नाम हरतालिका तीज पड़ा.

हरतालिका तीज शुभ मुहूर्त

हरतालिका तीज के दिन पूजा के लिए शुभ मुहूर्त सुबह 05-56 बजे से 08-31 बजे तक है. इस मुहूर्त की कुल अवधि 2 घंटे 35 मिनट है. यदि सुबह पूजा करना संभव न हो, तो प्रदोष काल में भी शिव-पार्वती की पूजा की जा सकती है.

पूजन विधि

- सुबह स्नान के बाद नए और साफ वस्त्र पहनें.
- सबसे पहले गणेश जी की पूजा और आवाहन करें.
- इसके बाद, रेत से बनी भगवान शिव और माता पार्वती की प्रतिमाओं का विधिवत पूजन करें.
- हरतालिका व्रत की कथा सुनें.
- पूजा के अंत में शिव-पार्वती की आरती करें.
- भगवान से अपनी मनोकामनाएं कहें और किसी भी गलती के लिए क्षमा याचना करें.
- पूजा के बाद, किसी विवाहित ब्राह्मण स्त्री को दान-दक्षिणा और फल अवश्य दें.

दक्षिण दिशा में लगाएं कुछ खास तस्वीरें

मिलेगी सुख-समृद्धि और धन-धान्य

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर की दक्षिण दिशा में कुछ खास तस्वीरें लगाना बेहद शुभ माना जाता है. ऐसा माना जाता है कि इन तस्वीरों को लगाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और धन-धान्य की

कभी कमी नहीं होती. इस दिशा में जिन पांच तस्वीरों को लगाने की सलाह दी जाती है, उनमें सात भागते घोड़ों की तस्वीर, गणेश जी की तस्वीर, हनुमान जी की तस्वीर (बैठी हुई मुद्रा में), पितरों की तस्वीर और फिनिक्स पक्षी की तस्वीर शामिल हैं.

सात भागते घोड़ों की तस्वीर

घर की दक्षिण दिशा वाली दीवार पर सात भागते घोड़ों की तस्वीर लगाना अत्यंत शुभ माना गया है. मान्यता है कि यह तस्वीर घर में सुख-समृद्धि और प्रगति लाती है.

हनुमान जी की तस्वीर

वास्तु के अनुसार, दक्षिण दिशा में हनुमान जी की बैठी हुई मुद्रा वाली तस्वीर लगाना शुभ होता है. कहा जाता है कि ऐसी तस्वीर लगाने से घर की सभी परेशानियां दूर हो जाती हैं.

पितरों की तस्वीर

पितरों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनकी तस्वीर को हमेशा दक्षिण दिशा में ही लगाना चाहिए. यह दिशा पितरों से जुड़ी मानी जाती है और इस दिशा में उनकी तस्वीर लगाने से उनका विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है.

फिनिक्स पक्षी की तस्वीर

वास्तु के नियमों के अनुसार, घर की दक्षिण दिशा में फिनिक्स पक्षी की तस्वीर लगाने से जीवन में धन का आगमन होता है और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी छुटकारा मिलता है.

गणेश जी की तस्वीर

जिन घरों का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में होता है, उन्हें मेन गेट के ऊपर गणेश जी की तस्वीर जरूर लगानी चाहिए. ऐसा करने से घर में नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश नहीं करती.

गणेश प्रतिमा की स्थापना से पहले जानें जरूरी नियम

गणेश चतुर्थी का पर्व देशभर में 27 अगस्त 2025, बुधवार को मनाया जाएगा. 10 दिनों तक चलने वाले इस उत्सव में भक्त भगवान गणेश की प्रतिमा घर में स्थापित कर उनकी सेवा करते हैं. गणेश चतुर्थी की पूजा और स्थापना से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण नियम और शुभ मुहूर्त को जानना आवश्यक है.पंचांग के अनुसार, गणेश चतुर्थी 26 अगस्त 2025 की दोपहर 01-54 बजे से शुरू होगी और यह तिथि 27 अगस्त की दोपहर 03-44 बजे तक रहेगी. हालांकि, गणेश प्रतिमा की स्थापना और पूजा के लिए सबसे शुभ समय 27 अगस्त 2025 को है. इस दिन सुबह या दोपहर के शुभ मुहूर्त में प्रतिमा घर लाई जा सकती है. गणेश विसर्जन 6 सितंबर 2025 को अनंत चतुर्दशी के दिन होगा.

गणेश स्थापना से जुड़े महत्वपूर्ण नियम

सूंड की दिशा

हमेशा ऐसी प्रतिमा लें जिसकी सूंड बाईं ओर मुड़ी हो, क्योंकि इससे शीघ्र ही शुभ फल मिलता है. दाईं ओर मुड़ी सूंड वाली प्रतिमा की पूजा के लिए कठोर नियमों का पालन करना होता है.

शुद्धता

प्रतिमा स्थापित करने से पहले पूजा स्थल को अच्छी तरह साफ कर गंगाजल का छिड़काव करें.

आसन

गणेश प्रतिमा को सीधे जमीन पर न रखें. एक साफ चौकी या पाटे पर लाल या पीले रंग का कपड़ा बिछाकर ही प्रतिमा स्थापित करें.

प्रतिमा का प्रकार

शास्त्रों के अनुसार, मिट्टी से बनी प्रतिमा की पूजा करना सबसे शुभ माना जाता है.

स्थापना का समय

प्रतिमा की स्थापना चतुर्थी तिथि में ही करनी चाहिए. रात में स्थापना करना शुभ नहीं माना जाता.

दिशा गणेश जी की प्रतिमा हमेशा उत्तर-पूर्व दिशा में स्थापित करनी चाहिए, क्योंकि यह पूजा-पाठ के लिए सबसे शुभ दिशा है.

प्रतिमा का आकार- घर पर पूजा के लिए छोटी प्रतिमा ही अच्छी मानी जाती है, जिसे आसानी से विसर्जित किया जा सके.

प्राण-प्रतिष्ठा

प्रतिमा स्थापित करने के बाद उनका अभिषेक करें और फिर प्राण-प्रतिष्ठा मंत्र का जाप करते हुए प्रतिमा में प्राण डालें.

पूजन सामग्री

गणेश जी की पूजा में सिंदूर, दूर्वा और मोदक का भोग लगाना अत्यंत शुभ माना जाता है. मोदक को उनका सबसे प्रिय प्रसाद माना जाता है.

नियमित पूजा

स्थापना के बाद दस दिनों तक सुबह-शाम गणेश जी की आरती, मंत्र जाप और भोग लगाना आवश्यक है.

व्रत

भक्त इस दौरान निर्जला या फलाहार का व्रत रखते हैं, खासकर महिलाएं परिवार की सुख-समृद्धि और संतान की लंबी आयु के लिए व्रत करती हैं.

राशिफल

दिनांक- 24 से 30 अगस्त 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति-इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में, मंगल कन्या राशि में, बुध कर्क राशि में ता. 30 को 5/56 शाम से सिंह राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा सिंह कन्या तुला और वृश्चिक राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- ता. 25 को चन्द्रदर्शन मुहूर्त के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिलहन, तेल, घी, लाल मिर्च, हींग, शेयर बाजार आदि में तेजी होगी उसके बाद ता. 27 से सभी अनाज, दालवाना, गुड़, खाड़ी, सोना, चांदी, तिल, तेल, घी, नमक, सोंठ, लाल मिर्च, सन, सूत, मोठ में मंदी का झटका आयेगा, सावधानी से कार्य करें.

पर्व/व्रत/त्यौहार:

रविवार	24 अगस्त को	तान्हा पोला
सोमवार	25 अगस्त को	बाबू दोज, वाराह जयंती
मंगलवार	26 अगस्त को	हरितालिका तीज व्रत,
बुधवार	27 अगस्त को	नूतन गणेश पूजन, गणेश जन्मोत्सव, गणेश उत्सव प्रारंभ, चन्द्रदर्शन निषेध
गुरूवार	28 अगस्त को	ऋषि पंचमी
शुक्रवार	29 अगस्त को	सूर्य षष्ठी, चम्पा षष्ठी, ललिता षष्ठी, मोरयाई छठ

मेष

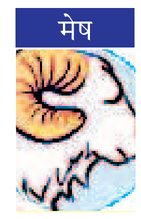

आपका यह सप्ताह प्रगति व सफलता लेकर आ रहा है, जो सपने देख रहे हैं, उन्हें पूरा करने की राह बनेगी, अपनी वरिष्ठता और सामर्थ्य से ज्यादा जिम्मेदारी आने से आपका तनाव बढ़ सकता है, समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल रहेंगे, दूसरों की मदद कर मन को खुशी देंगे,कार्यस्थल पर अनिश्चय का माहौल बना रहेगा, संबंधों की फिर से समीक्षा करनी होगी.

वृषभ

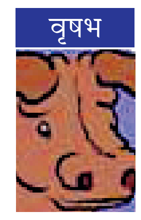

इस सप्ताह निजी संबंधों पर ध्यान देने का भरपूर समय मिलेगा, पुराने दोस्तों से मुलाकातों का दौर चलेगा, किसी भी योजना को आप इस तरह से अंजाम देंगे कि लोग आपकी तारीफकरेंगे, कार्य की अधिकता रहेगी, आपको आय के नये स्त्रोत तलाशना पड़ेंगे, घूमने का कार्यक्रम बन सकता है, दूसरों की मर्यादा का ध्यान रखें, बुजुर्ग व्यक्ति के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है.

मिथुन

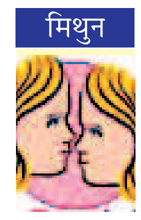

इस सप्ताह अपनी अभिरूचियों पर खुशियों पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा. आप जो चाहते हैं, उसके अनुसार आपके कार्य बनते चले जायेंगे, भाग्य मदद करेगा, हिम्मत और विश्वास से वृद्धि होगी. कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, तरक्की की उॅचाईयों पर पहुंचेंगे, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों को भी पूरा महत्व देंगे.

कर्क

इस सप्ताह अपने प्रयासों और मेहनत की बदौलत अच्छी सफलता मिलेगी, आपका मौलिक चिन्तन आगे बढ़ने में मदद करेगा, कार्यक्षेत्र में आपको निरंतर सफलता मिलेगी, पारिवारिक व निजी जीवन में खुशियों का अनुभव होगा, जो लोगआपके कार्य में अड़चने खड़ी कर रहे हैं, वे सभी सहयोग करेंगे, मेहनत कर लाभ प्राप्त करेंगे, सही निवेश के लिये बड़ों की राय जरूरी है.

सिंह

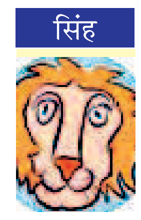

इस सप्ताह परिवार की सुख सुविधाओं पर बड़ा खर्च होगा, जिसे पसंद करते हैं, उसके साथ कुछ समय गुजारकर खुशी मिलेगी, पारिवारिक उत्सवों में प्रसन्नता मिलेगी, उच्च अध्ययन में सफलता के आसार हैं, नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को भी सफलता मिलेगी, विरोधी आपकी गतिविधियों पर नजर रखेगा, कामकाज में सावधानी रखें, अपने बिखरे हुये कार्यो को समेटने में सफलता मिलेगी.

कन्या

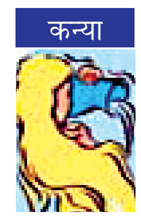

इस सप्ताह सफलता का वास्तविक आनन्द मिलेगा, जिस योजना को लेकर समय से प्रयास कर रहे थे, उसे अंजाम तक पहुंचाने में सफलता मिलेगी, सामाजिक चमक धमक, के साथ सफलता के आसमान पर बढ़ते दिखाई देंगे, नौकरी में स्थान बदलने का मौका मिल सकता है, घूमने फिरने के बहाने रिश्तेदारी में जा सकते है, पर विपरीत असर पड़ सकताहै, उन्नति की संभावना है.

तुला

इस सप्ताह आपका पूरा ध्यान अपने कैरियर व भविष्य की योजनाओं की ओर रहेगा, नई योजनाओं को पूरा करने में सभी का सहयोग रहेगा, लोग अपनी बात समझाने में सफल रहेंगे, राह में आ रही मुश्किलों का सामना करने पर कामयाबी मिलेगी, कार्यस्थल पर नई शुरूआत का अनुभव होगा जो आपके पक्ष में पक्ष में होगा.

वृश्चिक

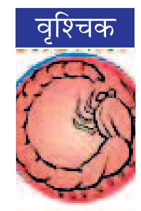

इस सप्ताह पुकन्या परेशानी से छुटकारा मिलेगा, सामाजिक और पारिवारिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी, पार्टियों का दौरजारी रहेगा, दायरा बढ़ाने की कोशिश मेंरहेंगे. मौजमस्ती छोड़कर कुछ काम करने का मन बनेगा, संपत्ति संबंधी मामले सुलझेंगे. सप्ताहान्त में विरोधियों से सजग रहकर कार्य करें, मीनकीय कार्यो में परिश्रम से सफलता मिलेगी.

धनु

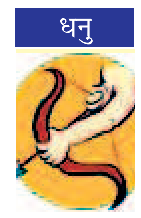

इस सप्ताह सफलता का योग है, अभी तक की नई मेहनत का लाभ मिलेगा, पारिवारिक व सामाजिक जीवन में अपने संबंधों को फिर घनिष्ठ संबंधों को फिर से बनाने में मदद मिलेगी, मानसिक संतोष के लिये कुछ दिन के लिये घर सेदूर जा सकते हैं, पारिवारिक सुरक्षा हेतु निवेश करेंगे. कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से मेलजोल बढ़ायें. आपके लिये फायदेमंद हो सकता है.

मकर

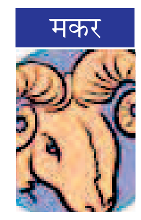

इस सप्ताह सफलता का अच्छा योग है, भाग्य अनुकूल बना रहने से मुश्किल कार्य भी आसानी से संपन्न होगा, अपनी मंजिल तक पहुंचाने के लिये आपने जितनी मेहनत की है, उसका लाभ मिलेगा, वैभव विलासिता पर खर्च होगा, जो लोग आपको नकारा समझते हैं,वे भी आपकी काबलियत की तारीफकरेंगे, सरकारी मामलों में कुछ विलंब हो सकता है, सौदे का मामला सुलझेगा.

कुम्भ

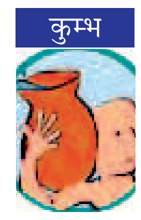

इस सप्ताह आर्थिक मामलों से निपटना होगा. पुराने कर्जो से छुटकारा पाने के लिये आपको योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना होगा, पारिवारिक आयोजनाओं में आप बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे, बच्चों के कैरियर को लेकर चिन्ता रह सकती है, मानसिक तनाव की स्थिति से छुटकारा मिलेगा, जिस पर विश्वास कर रहे हैं, वे लोग आपका साथ छोड़ सकते हैं.

मीन

इस सप्ताह नये संपर्क और नये व्यक्ति लाभदायक रहेंगे, आप सिर्फलाभ पर ही ध्यान नहीं देंगे, अपितु रिश्ते बनाने का प्रयास करेंगे, आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण दूसरों के कार्य में ध्यान देंगे, किसी कार्य के लिये की गई यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी, अपने लगाव व नजरिये में बदलाव का अवसर मिलेगा, व्यक्तिगत जीवन में कार्य में सामंजस्य से आप कामयाब रहेंगे.